द्वितीय् अध्याय

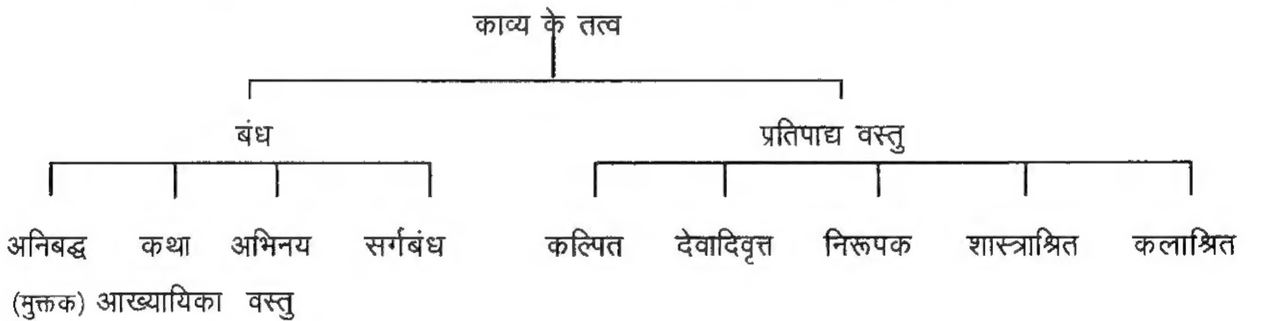
खंडकाव्य की व्याख्या और स्वरूप

खण्डकाव्य की भारतीय अवधारणा,
संस्कृत आचार्यों की अवधारणा,
हिंदी आचार्यों की अवधारणा

काव्य, मानव जीवन के वृत्त पर लिखा हुआ पुष्प है।जिस प्रकार पुष्प अपने दर्शन, स्पर्श और गंध से हमें आनंदानुभूति कराता है, उसी प्रकार काव्य भी सहृदयों को आनंदानुभूति में समर्थ बनाता है । अतः अभीष्ट है कि–

'रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' – जगन्नाथकृत रसगंगाधर

काव्य एक अविभाज्य तत्व है क्योंकि काव्य की मूल संवेदना अखण्ड होती है । किन्तु अभिव्यक्ति एक होते हुए भी अनेक कारणों से इसके स्वरूप में अंतर पड़ जाता है । इसी स्वरूपगत भिन्नता के कारण भिन्न–भिन्न काव्यरूपों का जन्म हुआ, हो रहा है और भविष्य में भी यह जारी रहेगा । और यही कारण है कि काव्यशास्त्र के उद्‌भव–काल से ही आचार्यवृंद काव्य विभाजन करते आ रहे हैं । काव्य में केवल प्रतिपाद्य वस्तु की सर्वस्व नहीं होती । एक ही वस्तु को भिन्न–भिन्न कवि भिन्न–भिन्न रूपों में ग्रहण करते हैं । इस तरह कवि–भेद से वस्तु में अंतःस्वरूप–भेद हो जाता है । इसके मूल में वह काव्य संवेदना है जो प्रत्येक कवि में विभिन्न कारणों से भिन्न हो जाती है । भारतीय साहित्य के आद्य आचार्यों में से एक भामह ने काव्य का वर्गीकरण दो आधारों पर किया है – बंध व प्रतिपाद्य वस्तु । प्रथम के आधार पर चार और द्वितीय के आधार पर पाँच भेद निरूपित किए हैं –



काव्य को वर्गीकृत करने का यह प्रथम प्रयास था । भामह की यह परम्परा साहित्यों में अब तक निरवच्छिन्न है । समय की दृष्टि से प्राचीनतम् होते हुए भी यह विभाजन अपने काल के साहित्य के लिए पूर्ण था। यद्यपि सामायिक दृष्टिपात करे तो गद्य–पद्य की पृथक्करण की बात स्पष्ट उभरती है,किन्तु यह साहित्य के उपलब्ध रूपों का नहीं अपितु उसके तत्वों का वर्गीकरण है । काव्यभेद निरूपण करते समय आ. भामह ने विचार और कल्पना का आश्रय लेकर काव्य के उपलब्ध रूपों को वर्गबद्ध करना ही अपना उद्येश्य रखा । इस तरह उनकी वर्गीकरण-पद्धति अनुगम पद्धति है ।

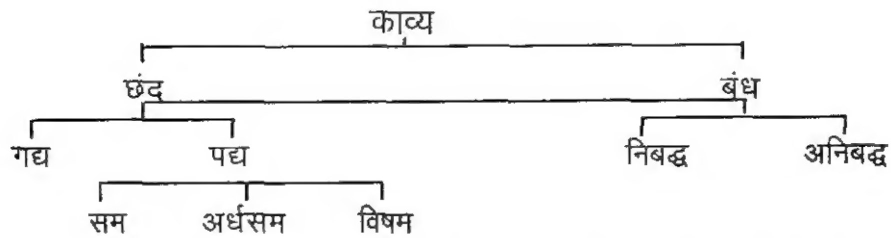
भामह के उपरान्त काव्य–भेद के दूसरे विवेचक आचार्य दंडी है –

पद्यं गद्यंच मिश्रं च तत् त्रिवैध व्यवस्थितम् ।
पद्यं चतुष्पदी तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा ॥
तै शरीरंच काव्यानामलंकाराश्च दर्शिताः ।
शरीरं तावदिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली ॥

॥ दंडी काव्यादर्श १/१०,११ ॥

अर्थात दंडी ने काव्य का वर्गीकरण न कर इष्ट अर्थ से विभूषित पद समूह 'काव्य शरीर' का वर्गीकरण किया है । व्यापक शब्द रूप में उनका काव्य शरीर, वाक्य योजना का पर्याय हो गया, जो उसके उल्लेखित उपभेदों से भी स्पष्ट होता है । गद्य–पद्य काव्य शरीर के उपभेद माने हैं । आ. दंडी का काव्य शरीर भामह के बंध से भिन्न है ।

आचार्य वामन ने अपने वर्गीकरण के लिए दो आधार लिए हैं – छंद और बंध । इन आधारों को मिश्रित न कर उन्होंने इनके आधार पर काव्य को अलग–अलग वर्गबद्ध किया है । यदि उनके वर्गीकरण की स्पष्टता है। छंद के आधार पर उन्होंने काव्य को गद्य और पद्य में तथा पद्य को पुनः सम, अर्धसम और विषम इन तीन भेदों में विभक्त किया है । इस वर्गीकरण को यही छोड़कर बंध के आधार पर अन्होंने काव्य के दो भेद निरूपित किए – निबद्ध और अनिबद्ध।



आचार्य रूद्रट ने काव्य को सर्वप्रथम काव्य, कथा और आख्यायिका आदि वर्गों में बॉटा और उन्हें पुनः उत्पाद्य–अनुत्पाद्य तथा वृहत्–लघु दो–दो भेदों में विभिक्त किया । यहॉं प्रथम काव्य का प्रयोग साहित्य के अर्थ में तथा द्वितीय काव्य का प्रबंधकाव्य के अर्थ में है –

संति द्विधा प्रबंधाः काव्य कथाख्यायिकादयः काव्ये ।
उत्पाद्यानुत्पाद्या महल्लघुत्वेन भूयोऽपि ॥

रूद्रट, काव्यालंकार १६ /२

आचार्य रूद्रट ने वर्गीकरण के लिए तीन आधार लिए हैं – स्वरूप, वस्तु और स्वरूपाकार । इसमें से अंतिम दो आधार काव्य के स्थूल है,अतएव उनके आधार पर काव्य का स्थूल वर्ग ही निकलेगा और प्रथम स्वरूप सूक्ष्म तत्व है,अतः उसके आधार पर काव्य का सूक्ष्म वर्गीकरण संभव है । ध्वन्यालोक और अग्निपुराण में प्रसंगवसात् काव्य के भेदों का उल्लेख है,किन्तु इस विषय पर गंभीरतापूर्वक विचार किया है आचार्य हेमचंद्र ने । इन्होंने आस्वादक इंद्रियाँ, बंध तथा संख्या, इन तीन आधारों पर काव्य का वर्गीकरण किया । सर्वप्रथम इन्हीं ने काव्य को प्रेक्ष्य और श्रव्य में विभाजित कर श्रव्य काव्य के महाकाव्य, आख्यायिका, कथा, चँपू और अनिबद्ध इतने वर्ग किए फिर,अनिबद्ध काव्य के मुक्तक, संदानितक, विशेषक, कलापक, कुलक और कोष इन छह भेदों में विभाजित किया । यद्यपि हेमचंद्र की वर्गीकरण विधि भी परम्परागत ही है किन्तु इसमें मौलिकता और सचिंतन का सर्वथा अभाव नहीं है ।

राजशेखर का काव्य–विभाजन सबसे विलक्षण है । इन्होंने काव्य का नहीं अपितु उसके अर्थों का विभाजन किया है । इन्होंने काव्य में सात प्रकार के अर्थ माने – दिव्य, दिव्य–मानुष, मानुष, पातालीय, मर्त्य–पातालीय, दिव्य पातालीय और दिव्य मर्त्य पातालीय ।

'स त्रिधा' इति द्रौहिणिः, दिव्यो, दिव्य मानुषो, मानुषश्च ।
'सप्तधा' इति यायावरीयः, पातालीयों, मर्त्यपातालीयों, दिव्यपातालीयो, दिव्यमर्त्यपातालीयश्च ॥
राजशेखर, काव्यमीमांसा पृ. १०३

राजशेखर ने इन सात प्रकार के अर्थों को दो वर्गों में रखा है – मुक्तकगत और प्रबंधगत तथा दोनों के पाँच–पाँच अवांतर भेद बताए हैं – शुद्ध, चित्र, कथोत्थ, संविधानकभू और आख्यानक ।

स पुनिर्द्विधा । मुक्तक प्रबंध विषयत्वेन ।
तावपि प्रत्येक पञ्चधा । शुद्धः, चित्रः, कथोत्थः, संविधानकभूः, आख्यानकवांश्च ॥
राजशेखर, काव्यमीमांसा पृ. ११४

राजशेखर के पश्चात् विश्वनाथ ने काव्य भेद निरूपण किया,जो प्राग्भूत सभी आचार्यों की अपेक्षा वैज्ञानिक और पूर्ण है । हिन्दी साहित्य में काव्यांगों के संबंध में इनका मत बहुप्रचलित है । आ. हेमचंद्र की तरह विश्वनाथ ने भी काव्य को श्रव्य और दृश्य इन दो भागों में विभक्त किया । तत्पश्चात छंद के आधार पर श्रव्यकाव्य को गद्य और पद्य दो वर्गों में विभाजित किया और मुक्तक को वाक्य विस्तारकी दृष्टि से मुक्तक, युग्मक, संदानितक अथवा विशेषक, कलापक और कुलक इन पाँच भागों में पुनर्विभक्त किया –

छन्दोबद्ध पदं पद्यं तेन मुक्तेन मुक्तकम् ।
द्वाभ्यां तु युग्मकं संदानितकं त्रिभिरिष्यते ॥
कलापकं चतुर्भिश्च पंचभिः कुलकं मतम् ।

विश्वनाथ, साहित्यदर्पण पृ. ६ / ३१४

इसके बाद सर्गबंध के महाकाव्य, काव्य और खंडकाव्य ये तीन वर्ग किये । काव्य और खण्डकाव्य इन दो काव्यरूपों के नामकरण और सूक्ष्म लक्षण निर्धारित करने का श्रेय आचार्य विश्वनाथ को ही जाता है ।

पं. जगन्नाथ ने मम्मट की तरह गुण के आधार पर अपनी कृति रस गंगाधर में काव्य को कोटिबद्ध किया। मम्मट ने काव्य प्रकाश में उत्तम, मध्यम और अवर ये तीन श्रेणियाँ निर्धारित की थी । पं. जगन्नाथ ने उत्तमोत्तम, उत्तम, मध्यम और अधम ये चार कोटियाँ बतायीं ।

हिन्दी साहित्य के आचार्य स्थूलरूप से दो वर्गों में विभक्त किए जा सकते हैं । प्रथम वे जिन्होने पाश्चात्य चिंतन का अनुसरण किया । द्वितीय वे जिनके मत का आधार संस्कृत साहित्य है । हिन्दी में ऐसे चिंतको का अभाव है जो हिन्दी साहित्य में उपलब्ध काव्यरूपों को वर्गबद्ध करते । क्योंकि यह बात अनायास ही परिलक्षित होती है कि काव्य भेद निरूपण करते समय हिन्दी के साहित्याचार्यों की दृष्टि हिन्दी की काव्य कृतियों पर न जाकर संस्कृत साहित्यशास्त्र पर ही निबद्ध रही।

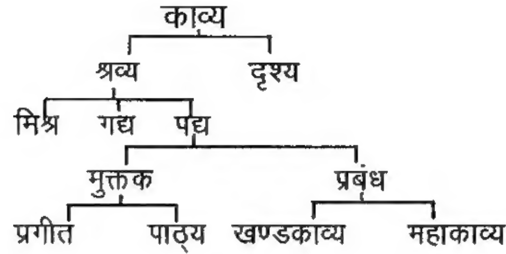
पाश्चात्य विचारधारा से प्रभावित आचार्यों में डॉ. श्यामसुंदर दास सर्वप्रमुख हैं । इनके मतानुसार–

"कविता को हम दो प्रमुख भागों में विभक्त कर सकते हैं – एक तो वह जिसमें कवि अपनी अंतरात्मा में प्रवेश करके अपने अनुभवों और भावनाओं से प्रेरित होता तथा अपने प्रतिपाद्य विषय को ढूंढ निकालता है, और रागों में पैठता है, और जो कुछ ढूंढ निकालता है उसका वर्णन करता है । पहले विभाग को भावात्मक, व्यक्तिप्रधान अथवा आत्माभिव्यंजक कविता कह सकते हैं । दूसरे विभाग को हम विषय प्रधान अथवा भौतिक कविता कह सकते हैं । यद्यपि इन दोनों विभागों की ठीक सीमा निर्धारित करना कठिन है फिर इससे अच्छा विभाग होना कठिन है।"

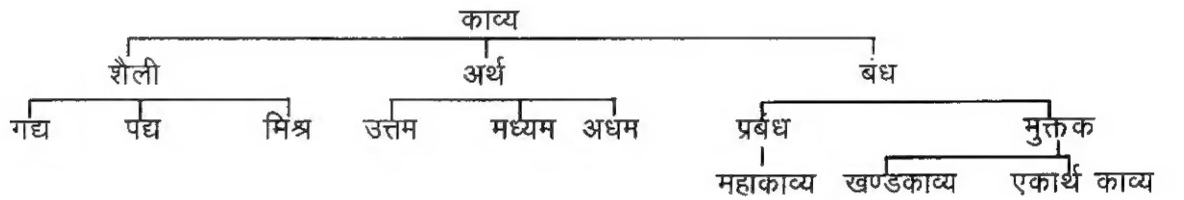
डॉ. श्यामसुंदर दास, साहित्यालोचन प. ११३

संस्कृत साहित्य के अनुयायी विद्वानों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है । बाबू गुलाबराय ने संस्कृत साहित्य शास्त्र का अनुकरण करते हुए काव्य वर्गीकरण में काव्य का प्रयोग साहित्य के अर्थ में किया है और वर्गीकरण का

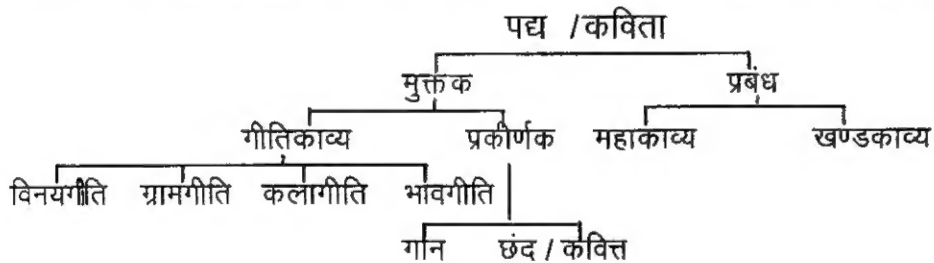
आधार भी हेमचंद्र और विश्वनाथ द्वारा निर्धारित आधार रहें हैं । यह वर्गीकरण अधोअंकित तालिका*[1] द्वारा स्पष्ट होता है --



आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने समन्वयात्मक दृष्टिकोण रखा है । इन्होने नवीन आधार का अन्वेषन नहीं किया है । अत: ये किसी नवीन काव्य–रूप की कल्पना नहीं कर सके । इन्होने शैली, अर्थ और बंध के आधार पर काव्य का वर्गीकरण किया है । वाङमय विमर्श में उल्लेखित वर्गीकरण इस प्रकार है –



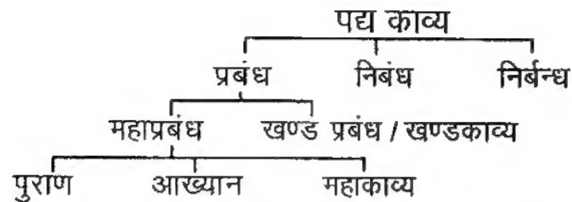
'हिन्दी काव्य शास्त्र का इतिहास' एवं 'काव्य शास्त्र' नामक अपनी दोनों पुस्तकों में डॉ. भागीरथी मिश्र ने काव्य –रूपों पर विचार किया है । प्रथम कृति में उन्होंने साहित्य का ही वर्गीकरण किया है –



द्वितीय कृति काव्य–शास्त्र में उन्होने पद्य–काव्य के जो भेद प्रस्तुत किए हैं,उन्हीं में मौलिकता के दर्शन होते हैं।

*[1]बाबू गुलाबराय, काव्य के रूप पृ. २४

मिश्र जी के वर्गीकरण को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है –

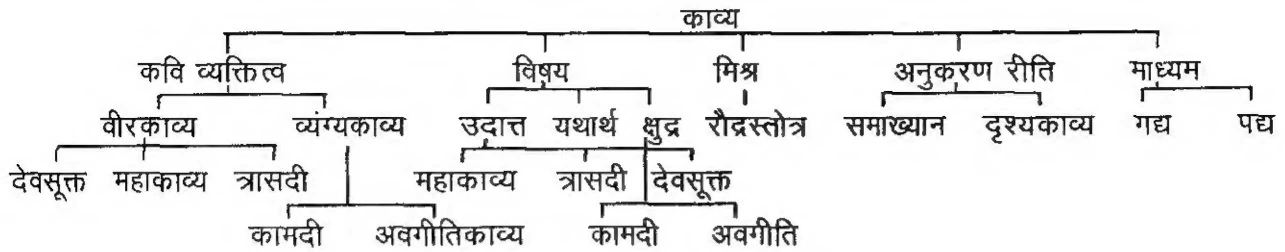


अब तक संस्कृत और उसका अनुसरण करते हुए हिन्दी के विद्वान भी पद्य के दो भेद प्रबंध और मुक्तक करते आ रहे थे । मिश्रजी ने प्रबंध और मुक्तक के साथ निबंध (निबद्ध) काव्य का भी वर्ग रखा और इसे स्पष्ट करते हुए लिखा है कि –

हिन्दी काव्य के क्षेत्र में निबंध या निबद्ध काव्य का विकास देखने को मिलता है । इन्हें प्रबंध काव्य नहीं कहा जा सकता है,क्योंकि इनमें कथानक का विकास महत्व नहीं रखता । इनमें प्रायः विचारधारा या भावधारा प्रधान है । ये या तो पत्र के रूप में हैं या अनेक छंदों में क्रमशः विचार–श्रृंखला को प्रगट करने वाले हैं । ऐसे काव्यों की संज्ञा निबंध या निबद्ध काव्य ही हो सकती है।

डॉ. भागीरथ मिश्र, काव्य शास्त्र पृ. ६३

पाश्चात्य साहित्य में काव्य का वर्गीकरण अरस्तू ने इन पॉच आधारों पर किया है – कवि व्यक्तित्व, विषय, मिश्र, अनुकरण–रीति और माध्यम । कवि व्यक्तित्व के अनुसार उसने दो भेद किये –वीर काव्य और व्यंग्य काव्य। वीर काव्य के अंतर्गत देव–सूक्त, महाकाव्य, त्रासदी तथा व्यंग्य काव्य के अंतर्गत कामदी, अवगीति काव्य आदि को समाविष्ट किया । विषय के आधार पर अरस्तू ने तीन प्रकार निश्चित किए – उदात्त काव्य, यथार्थ काव्य और क्षुद्र काव्य । उदात्त काव्य के अंतर्गत महाकाव्य, त्रासदी, देव–सूक्त आदि/यथार्थ काव्य के अंतर्गत यथार्थ जीवन का चित्रण करने वाले काव्य तथा क्षुद्र काव्य के अंतर्गत कामदी, अवगीति काव्य को समाविष्ट किया । मिश्र आधार से कदाचित् अरस्तू को कवि व्यक्तित्व एवं विषय का मिश्रण अभिप्रेत हो । रौद्रस्तोत्र मिश्र आधार पर ही आधारित है । चौथा एवं पाँचवाँ आधार क्रमशः अनुकरण–रीति और माध्यम हैं । अनुकरण–रीति के आधार पर समाख्यान काव्य, दृश्य काव्य और माध्यम के अनुसार गद्यकाव्य और पद्यकाव्य भेद किए–



यह वर्गीकरण अपने समय के विद्यमान साहित्य को देखकर अनुगम विधि से किया गया था*1 ।

W. H. हडसन ने अपनी पुस्तक *An Introduction to the Study of Litrature* में महाकाव्य के वर्गीकरण की समस्या पर विचार करते हुए काव्य को सर्वप्रथम विषयीप्रधान और विषयप्रधान वर्गों में विभक्त किया। विषयीप्रधान काव्य को लीरिक *(Lyric)*. मेडिटेटिव एण्ड फिलोसोफिकल, ओड, एलिजी, एपिस्ल, सटायर और सानेट वर्ग में विभाजित किया तथा विषय प्रधान काव्य को नैरेटिव और ड्रैमेटिक में विभक्त कर नैरेटिव को बैलड, एपिक, मेटिकल रोमांस और यथार्थोन्मुख काव्य *(Realizm in poetic art)*. में भेद कर एपिक और यथार्थोन्मुख काव्य के अवांतर भेद भी निरूपित किए । एपिक के एपिक ऑफ ग्रोथ, एपिक ऑफ आर्ट, मॉक एपिक तथा यथार्थोन्मुख काव्य के समाज के निम्नतम वर्ग एवं उपेक्षितों के जीवन से वस्तु ग्रहण करनेवाले काव्य में वर्गीकृत किया ।

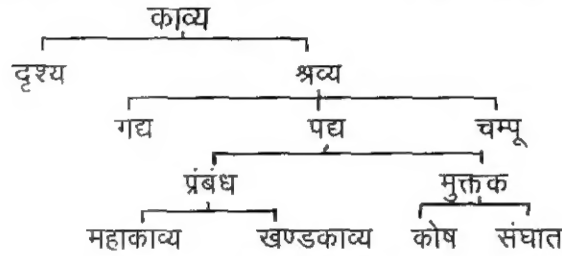
Varieties of Poetic Art - We have now reached the inquiry : What varieties of poetic art are the outcome of the two kinds of poetic impulse, dramatic imegination and lyric or egoistic imagination?

Encyclopaedia Britannica, 1950 Vol. 18, Page- 106

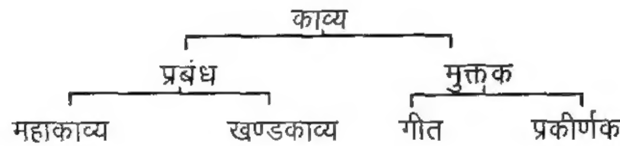
*1अरस्तू का काव्यशास्त्र, अनुवादक डॉ नगेन्द्र और श्री महेन्द्र चौधरी, भूमिका पृ. ६२

खण्डकाव्य की व्याख्या, स्वरूप और लक्षण

यह तो निर्विवाद है कि भारतीय साहित्य का आरम्भ काव्यरूप में ही हुआ और सुदीर्घ काल तक साहित्य काव्यबद्ध ही रहा । आद्यग्रंथ ऋग्वेद की रचना भी पद्यबद्ध में ही हुई । संस्कृत के आचार्यों ने काव्य का विभाजन करते समय इंद्रियों के आधार पर उसे 'दृश्य' और 'श्रव्य' दो रूपों में बॉटा । श्रव्य को उन्होने गद्य, पद्य और मिश्र इन तीन भागों में विभाजित किया । पद्य को पुनः महाकाव्य और खण्डकाव्य के रूप में विभाजित किया है



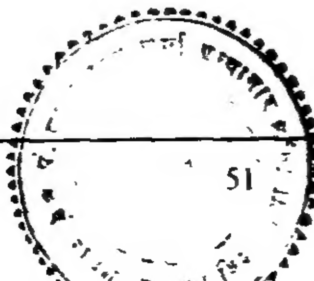
हिन्दी में काव्य का विभाजन करते समय यद्यपि संस्कृत के विभाजन को ही आधार माना गया है किन्तु समय के साथ परिवर्तित काव्य रूपों के विकास से कुछ परिवर्तन भी हुए हैं अतः हिन्दी के दृष्टि से काव्य के अग्रलिखित रूप होते हैं –



प्रबंधकाव्य :-

प्रबंध का 'प्र' विशिष्टताबोधक उपसर्ग है, और 'बंध' उसका वाचक है,अर्थात् जो अनेक पद्यों में संबंधसूत्र पिरोता है, उन्हें परस्पर आबद्ध करता है, प्रबंध कहलाता है । प्रबंध में पद्यों का बंधन कथा का बंधन होता है । इस तरह जिस काव्य में श्रृंखलाबद्ध रूप में किसी कथा का वर्णन हो,उसे प्रबंधकाव्य कहते हैं । श्रृंखला की कड़ी परस्पर एक दूसरे को मिलाए हुए रहती है, वैसे ही प्रबंध की कथाएँ आपस में संबद्ध होती हैं ।

प्रबंधकाव्य के रचयिता के पास पूरी वनस्थली बिखरी रहती है । उसमें वह स्वच्छंद विचरण कर कहीं सरस सरोवर बना सकता है, तो कहीं रंग बिरंगे पुष्पों से उसे संजो सकता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने प्रबंधकाव्य के



संबंध में 'जायसी ग्रंथावली' के वक्तव्य में लिखा है –

"प्रबंध काव्य में मानव जीवन का पूर्ण दृश्य होता है । उसमें घटनाओं की संबंध-श्रृंखला और स्वाभाविक क्रम से ठीक-ठीक निर्वाह के साथ हृदय को स्पर्श करने वाले उसके नाना भावों का रसात्मक अनुभव कराने वाले प्रसंगों का समावेश होना चाहिए ।"

कथानक के आकार और उसकी व्यापकता की दृष्टि से प्रबंधकाव्य, महाकाव्य और खण्डकाव्य में विभक्त होता है ।

'महाकाव्य वह है जिसका कथानक इतिहास अथवा किसी प्रसिद्ध कथा पर आधारित हो जिसका नायक चतुर और उदात्त हो, जो अलंकृत होने के साथ ही विविध भावों एवम् रसों से पूर्ण हो । वृहत, सर्गवद्ध तथा पंचसंधियों से युक्त हो*[1] ।' इस तरह महाकाव्य सम्पूर्ण जीवन से गृहीत सर्वांगपूर्ण अनुभूति की अभिव्यक्ति है तो खण्डकाव्य उसी जीवन के एक ही पक्ष से गृहीत अनुभूति की अभिव्यंजना है।

प्रबंधकाव्य का दूसरा प्रकार है 'खण्डकाव्य' । भारतीय प्राचीन आचार्यों ने अपने संस्कृत के काव्यशास्त्रीय ग्रंथों में खण्डकाव्य की स्वतंत्र व्याख्या नहीं की है । खण्डकाव्य उनके सर्गबद्ध काव्य के अंतर्गत ही आता है । उन्होंने सर्गबद्ध काव्य के दो रूप महत् और लघु बताये हैं । और लघुकाव्य को खण्डकाव्य कहा जा सकता है । संस्कृत में खण्डकाव्य के उदाहरण स्वरूप 'मेघदूत' का नाम उल्लेखित किया जाता है । खण्डकाव्य के संबंध में रूद्रट ने काव्यालंकार में लिखा है–

यत्र महंतो येषु च विनस्तेष्वमिधीयते,
चतुर्सर्गः सर्वे रसाः क्रियते काव्य स्थानानि सर्वाणि ।
ते लहावो विशेया यष्वन्यतमों भवेच्चतु,
वर्गति असमग्रनेकरसा ये च समग्रकर सयुक्ताः॥*[11]

हमें सर्वप्रथम खण्डकाव्य का स्पष्ट उल्लेख 'विश्वनाथ कविराज' के 'साहित्य दपर्ण' में ही मिलता है –

'खंडकाव्यं भवेत्काव्यस्येकदेशानु सारि च' ।*[111]

*[1] आचार्य दडी काव्यादर्श १ /१४ १९
*[11] काव्यालकार – रूदट पृष्ट १६ /२१
*[111] साहित्य दर्पण – विश्वनाथ. पृठ ६ /३२९

अर्थात काव्य के एक अंश का अनुसरण करनेवाला खण्डकाव्य होता है । इसी परिभाषा को ध्यान में रखकर पं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने अपने वांडमय विमर्श में लिखा है –

'खण्डकाव्य वह है, जिसकी रचना महाकाव्य के ढंग पर की गई हो, पर जिसमें पूर्ण जीवन ग्रहण न कर खण्ड जीवन ही ग्रहण किया जाता है । यह खण्ड जीवन इस प्रकार व्यक्त किया जाता है, जिसमें वह प्रस्तुत रचना के रूप में स्वत: पूर्ण प्रतीत होता है।'

खण्डकाव्य के संदर्भ में विविध विद्वानों के विविध मत हैं । बाबू गुलाबराय के अनुसार – "खंडकाव्य में प्रबंधकाव्य का सा तारतम्य तो रहता है किन्तु महाकाव्य की अपेक्षा उसका क्षेत्र सीमित होता है । उसमें जीवन की वह अनेकरूपता नहीं रहती जो कि महाकाव्य में होती है।" *[1] आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र लिखते हैं कि– "महाकाव्य के ही ढंग पर जिस काव्य की रचना होती है, पर जिसमें पूर्ण जीवन न ग्रहण करके खण्डजीवन ही ग्रहण किया जाता है उसे खण्डकाव्य कहते हैं।" *[2] डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी निर्दिष्ट करते हैं – "खण्डकाव्य, वह आकारगत लघुकाव्य है जो एकार्थ काव्य का देशानुसारी है । यह महाकाव्य की भांति अपनी कथा को महाकाव्योचित वर्णनों एवं विवरणों की ओर न मोड़कर एकार्थ काव्य की भांति मूल प्रयोजन की ओर द्रुतगति से बढ़ाता है । भावनात्मकता या प्रगीतात्मकता का सन्निवेश कथा और पात्र की परिस्थितियाँ और व्यक्तित्व पर निर्भर है।"*[3] श्री बलदेव उपाध्याय के अनुसार –"वह काव्य जो मात्रा में महाकाव्य से छोटा परन्तु गुणों में उससे कथमपि न्यून न हो, खण्डकाव्य कहलाता है।"*[4] डॉ. हरदेव बाहरी के अनुसार– "खण्डकाव्य में एक ही घटना होती है और उसमें मानव जीवन के एक ही पहलू पर प्रकाश डाला जाता है । उसमें महाकाव्य के अन्य गुण पूर्णतया विद्यमान रहते हैं।"*[5] डॉ. धीरेन्द्र वर्मा लिखते हैं– "खण्डकाव्य एक ऐसा पद्यबद्ध कथाकाव्य है जिसके कथानक में एकात्मक अन्विति हो । कथा में एकदेशीयता हो तथा कथा विन्यास क्रमशः आरम्भ, विकास, चरमसीमा और निश्चित उद्येश्य में परिणित हो।" *[6]

खण्डकाव्य की व्याख्या भारतीय साहित्य शास्त्र कोष, डॉ. राजवंश सहाय हीरा, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, प्रथम संस्करण १९७८ मे पृष्ठ ४७५ में इस प्रकार से है –

खण्ड : किसी वृहत अर्थ में से उसके एक भाग का वर्णन करना खण्ड है ।
खण्डकाव्य : काव्य का एक प्रकार जिसमें जीवन का खण्ड चित्र प्रस्तुत किया जाता है । यह प्रबंध काव्य का एक

*[1] काव्य के रूप, बाबू गुलाबराय, पृ–११८
*[2] वाडमयविमर्श, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, पृ–४६
*[3] साहित्य शास्त्र के प्रमुख पक्ष, डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
*[4] संस्कृत आलोचना,द्वितीय खंड, श्री बलदेव उपाध्याय, पृ–७२
*[5] हिंदी की काव्यशैलियों का विकास डॉ. हरदेव बाहरी, पृ–५
*[6] हिंदी साहित्य कोश, सं. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, पृ. २४८

विशेष भेद है । संस्कृत के पूर्ववर्ती आचार्यो– भामह, दंडी, वामन आदि ने इसका विवेचन नहीं किया है । सर्वप्रथम रूद्रट ने क्षुद्र या लघुकाव्य की अभिधा से एक काव्य का वर्णन किया है । उनके अनुसार लघुकाव्य का नायक अपने सहायकों– द्विज, सेवक, सार्थवाह के साथ में आपत्तिग्रस्त दिखया जाता है और अंत में उसकी आपत्तियाँ नष्ट हो जाती हैं, जिससे उसका सुखमय अंत होता है । बस काव्य में करूण रस या प्रवासगत विप्रलंभ श्रृंगार का वर्णन कर प्रारम्भ में नायक का अनुराग प्रदर्शित किया जाता है और अंत में उसका उत्कर्ष दिखाया जाता है ।

खण्डकाव्य प्रलंबकालाश्रयी क्षणों की अनुभूति की अभिव्यंजना है । उसका परिगणन प्रबंध काव्यांतर्गत होता है । खण्डकाव्य के खण्ड शब्द का यह अर्थ कदापि नहीं है कि बिखरा हुआ अथवा किसी महाकाव्य का एक खण्ड है । प्रत्युत यह खण्ड शब्द उस अनुभूति के स्वरूप की ओर संकेत करता है जिसमें जीवन अपने सम्पूर्ण रूप में कवि को न प्रभावित कर आंशिक या खण्ड रूप में ही प्रभावित करता है । खण्डकाव्य में अनुभूति का स्त्रोत जिस जीवनखण्ड से आता है, वह जीवन अपने में पूर्ण होता है और वह अनुभूति भी उसी भांति अपने में पूर्ण होती है ।

संस्कृत में खण्डकाव्य का उदाहरण 'मेघदूत' दिया जाता है । प्राचीनकाल के काव्य में 'चंद्रप्रकाश, जयसिंह प्रकाश, शिवराज भूषण, भवानी प्रकाश, छत्रप्रकाश' आदि को काव्य भेदों की दृष्टि से खण्डकाव्य के अंतर्गत ही स्थान दिया जा सकता है । आधुनिककालीन कृतियों में गुप्तजी की 'यशोधरा, जयद्रथ वध, पंचवटी, सिद्धराज, नहुष' आदि, सियारामशरण का 'मौर्यविजय', रामनरेश त्रिपाठी का 'पथिक', प्रसाद जी का 'प्रेम–पथिक', निराला का 'तुलसीदास', 'राम की शक्तिपूजा' आदि अनेक उल्लेखनीय खण्डकाव्य हैं ।

आचार्य विश्वनाथ ने महाकाव्य और खण्डकाव्य के अतिरिक्त तीसरे भेद एकार्थकाव्य की परिभाषा देते हुए लिखा है –

'भाषा विभाषा नियताम् काव्यं सर्ग समुत्थितम् ।
एकार्थ प्रवगे: पद्यै: संधि सामग्र: भवर्तितम ॥'

साहित्य दर्पण, विश्वनाथ, पृ. ६–३२८

अर्थात् भाषा या विभाषा के नियम से निर्मित एक अर्थ का निरूपण करनेवाला पद्यबद्ध सर्गो में विभक्त ग्रंथ जो समस्त संधियों से रहित हो, एकार्थ काव्य कहलाता है । आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के अनुसार – "एकार्थ की ही अभिव्यक्ति के कारण ऐसी रचनाएँ महाकाव्य और खण्डकाव्य के बीच की रचनाएँ हैं । इन्हें एकार्थ काव्य या केवल काव्य कहना चाहिए ।" इस प्रकार इसका विस्तार खण्डकाव्य से अधिक तथा महाकाव्य से कम होता है।

*[1] वाङ्मय विमर्श, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, पृ. १४

खण्डकाव्य की भारतीय अवधारणा—

संस्कृत आचार्यों के मत

संस्कृत के पूर्ववती आचार्यों—भामह, दंडी, वामन आदि ने खंडकाव्य का विवेचन नहीं किया है । सर्वप्रथम खण्डकाव्य की स्वरूप कल्पना आचार्य रूद्रट के मस्तिष्क में आयी । उन्होंने कथा आख्यायिकादि की तरह प्रबंध काव्य के महत् और लघु दो रूपों का निरूपण किया है –

संति द्विधा प्रबंधाः काव्यकथाख्यायिकादयः काव्ये ।
उत्पाद्यानुत्पादा महल्लघुत्वेन, भूयोअपि ॥

रूद्रट, काव्यालंकार १६ /२

आचार्य रूद्रट ने क्षुद्र या लघुकाव्य की अभिधा से एक काव्य का वर्णन किया है । उसका स्वरूप निर्धारण करते हुए उन्होंने लिखा है कि इसमें चतुर्वर्गफल अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष में से किसी एक की आश्रयी कथा स्वभावतः ही सीमित होगी, लेकिन इतना कहने से लघुकाव्य का निश्चित आधार—फलक ज्ञात नहीं होता है । चतुर्वर्ग प्राप्ति की भी अनेक घटनाएँ हो सकती हैं और उसकी प्राप्ति में ही उसका जीवन बीत जाता है। तब ऐसे व्यक्ति को नायक बनाकर काव्य लिखा जाय तो उसमें उसका सम्पूर्ण जीवन चित्रित हो जाने पर भी रूद्रट की परिभाषानुसार वह लघुकाव्य ही होगा। और अनेक रस असमग्र रूप में या एक रस समग्र रूप में होता है ।

इस काव्य में करूण रस या प्रवासगत विप्रलंभ श्रृंगार का वर्णन कर प्रारम्भ में नायक का अनुराग प्रदर्शित किया जाता है । सभी रसों के पूर्ण परिपाक के लिए विस्तृत कथा—पट की अपेक्षा होती है । अनेक रसों की असमग्र निष्पत्ति अथवा एक रस की समग्र निष्पत्ति के लिए अपेक्षाकृत लघु कथाधार चाहिए ।

ते लाघवो विज्ञेया येक्यतमो भवेच्चतुवर्गात् ।
असमग्रानेकरसा ये च समग्रैकरस युक्ताः ॥

रूद्रट, काव्यालंकार १६ /६

उनके अनुसार लघुकाव्य का नायक अपने सहायकों–द्विज, सेवकों, सार्थवाह के साथ प्रारम्भ में आपत्तिग्रस्त दिखाया जाता है और अंत में उसकी आपत्तियाँ नष्ट हो जाती हैं,जिससे उसका सुखमय अंत होता है । अंत में उसका उत्कर्ष दिखाया जाता है । इस तरह रूद्रट का लघुकाव्य, खंडकाव्य से वृहत्तर और किंचित् अतिव्याप्त है –

कार्यात्क्षुद्रे काव्ये खण्डकथायां च नायकं सुखिनम् ।
आपदगतं च भूयो द्विजसेवक सार्थ वाहारिम् ॥
अत्र रसं करूणं वा कुर्यादथवा प्रवास श्रृंगारम् ।
प्रथमानुरागमथवा पुनरंते नायकाभ्युदयम् ॥

रूद्रट, काव्यालंकार १६ /३३–३४

इस अतिव्याप्ति दोष का परिहार विश्वनाथ ने किया । इसके लिए उन्होंने महाकाव्य और खण्डकाव्य के बीच की एक विषय विधा –"काव्य"की कल्पना की और इस तरह रूद्रट निरूपित प्रबंधकाव्य के दो भेदों के स्थान पर तीन भेद हो गये – महाकाव्य, काव्य और खण्डकाव्य । खण्डकाव्य नाम और उसके निश्चित वस्तुपट की कल्पना का सारा श्रेय आचार्य विश्वनाथ को है । सर्वप्रथम खण्डकाव्य की परिभाषा विश्वनाथ ने 'साहित्य दर्पण' में प्रस्तुत की है –

भाषा विभाषा नियमात्काव्यं सर्ग सभुत्थितन् ।
एकार्थ प्रवणेः पद्यैः संधि सामग्यवर्जितम् ॥
खण्ड काव्यंवेत्काव्यस्यैक देशानुसारि च ॥

विश्वनाथ, साहित्य दर्पण १६ /३२८–३२९

आचार्य विश्वनाथ ने खण्डकाव्य को काव्य का एकदेशानुसारी कहा है । काव्य एकार्थ प्रवण होता है अर्थात् उसमें पूर्ण जीवन का एक विशिष्ट पक्ष ही चित्रित होता है । जीवन के उस विशेष पक्ष का एक अंश कोई घटना ही खण्डकाव्य की वस्तु का आधार होती है । उनके मत से"काव्य किसी भाषा या उपभाषा में रचित उस रचना को कहते हैं,जो सर्गबद्ध हो तथा जिसमें एक कथा का निरूपण हो और उसमें सभी संधियाँ न हो । काव्य के एक अंश का अनुसरण खण्डकाव्य में होता है"।*1

कुछ विद्वान् साहित्य दर्पण के उक्त सूत्र का अर्थ यह लेते हैं कि खण्डकाव्य में जीवन के किसी एक पक्ष की अभिव्यक्ति होती है । जीवन के किसी एक पक्ष को वस्तु रूप में ग्रहण करने वाले सभी काव्य खण्डकाव्य नहीं हो सकते । किसी व्यक्ति विशेष के जीवन के भी एक पक्ष से संबंध अनेकानेक घटनाएँ होती हैं । उन सारी घटनाओं की सामंजस्य

*1डॉ राजवश सहाय हीरा, भारतीय साहित्य शास्त्र कोश, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना

योजना खण्डकाव्य का विषय नहीं हो सकती । खण्डकाव्य में नायक के जीवन की किसी एक घटना को लिया जाता है जो उसके जीवन के किसी एक पक्ष की झलक प्रस्तुत करती है ।

आ. विश्वनाथ की परिभाषा में खण्डकाव्य का स्वरूप स्पष्ट नहीं होता,पर उससे यह ज्ञात होता है कि महाकाव्य की अपेक्षा इसका आकार लघु होता है और इसमें जीवन के पक्ष या दृष्य का चित्रण किया जाता है । विश्वनाथ खण्डकाव्य की विषयगत् सीमाओं का ही संकेत करते हैं, उनकी दृष्टि इसके रूप विधान विषयक संभावनाओं की ओर नहीं गई । उनका कथन है कि खण्डकाव्य का परिमित विषय सीमित आकार में ही अभिव्यक्त होता है ।

इसके पश्चात् खण्डकाव्य संस्कृत साहित्य और संस्कृत साहित्येतिहास दोनों में उपेक्षित रहा । आ. विश्वनाथ के उपरान्त किसी भी आचार्य ने उनकी खण्डकाव्य की कल्पना को आगे नहीं बढ़ाया और उन्होंने जिस 'मेघदूत' को खण्डकाव्य का उदाहरण माना था, वह और उस प्रकार के काव्य सभी साहित्याकारों द्वारा गीतकाव्य कहे जाते रहे हैं ।

हिन्दी आचार्यो के मत

हिन्दी के विद्वान आचार्य विश्वनाथ के सूत्र का ही भाष्य करते आ रहे हैं । बाबू गुलाबराय ने तो पूर्णतः आचार्य के सूत्र का अनुसरण किया है । उनके अनुसार–

"खण्डकाव्य में एक ही घटना को मुख्यता दी जाकर उसमें जीवन के किसी एक पहलू की झाँकी-सी मिल जाती है ।"

बाबू गुलाबराय, काव्य के रूप, पृ. २३

"खण्डकाव्य वह प्रबंध काव्य है जिसमें किसी भी पुरूष के जीवन का कोई अंश ही वर्णित होता है, पूरी जीवन–गाथा नहीं । इसमें महाकाव्य के सभी अंग न रहकर एकाध अंग ही रहते हैं "

डॉ. भागीरथ मिश्र, हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास, पृ. ४२१

प्रबंधकाव्य का दूसरा भेद खण्डकाव्य या खण्ड प्रबंध है जिसमें प्रायः जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना या दृश्य का मार्मिक उद्‌घाटन होता है और अन्य प्रसंग संक्षेप में रहते हैं – इसमें भी कथा संगठन आवश्यक है, सर्गबद्धता नहीं। इसमें भी वस्तु–वर्णन, भाव वर्णन एवं चरित्र–चित्रण किया जाता है पर कथा विस्तृत नहीं होती ।

डॉ. भागीरथ मिश्र, [illegible] काव्यशास्त्र, पृ. ६१

मिश्र जी ने खण्डकाव्य के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए अपने काव्यशास्त्र में लिखा है कि खण्डकाव्य में मुख्यता तो किसी एक घटना अथवा दृश्य की रहती है लेकिन अन्य प्रसंग भी संक्षेप में रहते हैं । खण्डकाव्य के नायक पर विचार करते हुए 'हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास' में डॉ. मिश्र ने नायक को ख्यात, अख्यात, कल्पित, देव, दनुज, मनुज, शांत, ललित, उदात्त, उद्धत – किसी भी प्रकार का माना है । मिश्र ने इसमें सर्गवद्धता की अपेक्षा कथा संगठन को आवश्यक माना है और खण्डकाव्य हेतु खण्डप्रबंध शब्द प्रयुक्त किया है ।

"महाकाव्य के ही ढंग जिस पर जिस काव्य की रचना होती है जिसमें पूर्ण जीवन न ग्रहण करके खण्ड–जीवन ही ग्रहण किया जाता है, उसे खण्डकाव्य कहा जाता है । यह खण्ड–जीवन इस प्रकार व्यक्त किया जाता है जिससे वह प्रस्तुत रचना के रूप में स्वतः पूर्ण प्रतीत हो ।"

आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाङ्मय विमर्श, पृ. ४६

ढंग से आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का अभिप्राय शैली से प्रतीत होता है । इस तरह अगर खण्डकाव्य की रचना महाकाव्य की शैली के समान माने तो खण्डकाव्य हेतु भी सर्गबद्धता प्रत्येक सर्ग में भिन्न छंदों का प्रयोग, सर्गांत में छंद –परिवर्तन, पंच–संधियों की योजना, प्रकृति की सांगोपांग वर्णन, लोक जीवन की झलक आदि तत्व अनिवार्य हो जाता है । खण्डकाव्य का क्षेत्र लघु होता है। अतः ये तत्व महाकाव्य के अनुरूप रूपों और मात्रा में खण्डकाव्य में उपस्थित नहीं रहते हैं, पर ये तत्व सीमित रूप में खण्डकाव्य में विद्यमान रहते हैं । खण्डकाव्य आद्यंत एक छंद में भी लिखा जाता है और अनेक छंद में भी । सर्गांत में छंद परिवर्तन अप्रयोज्य है, किन्तु किसी भी परिस्थिति में खण्डकाव्य का सौंदर्य न्यून नहीं होता । बलदेव उपाध्याय, विश्वनाथ मिश्र की अवधारणा से सहमत होते हुए इस बात पर जोर देते हैं कि खण्डकाव्य, गुणों में महाकाव्य से कथमपि शून्य न हो । उपाध्याय जी ने खण्डकाव्य को मुख्यतया विषयीप्रधान माना है और वैयक्तिक विचारों की अभिव्यक्ति खण्डकाव्य में मानी है/यथा–

"वह काव्य जो मात्रा में महाकाव्य से छोटा परन्तु गुणों में उससे कथमपि न्यून न हो, खण्डकाव्य कहलाता है । महाकाव्य विषय प्रधान होता है परन्तु खण्डकाव्य मुख्य विषयीप्रधान होता है, जिसमें लेखन कथानक के स्थूल ढाँचे में अपने वैयक्तिक विचारों को प्रसंगानुसार वर्णन करता है ।"

बलदेव उपाध्याय, संस्कृत आलोचना द्वितीय खंड, पृ. ७२

खडाकाव्य प्रलम्बालाश्रयी क्षणों की अनुभूति की अभिव्यंजना है । खण्डकाव्य यद्यपि जीवन के एक अंग को लेकर चलता है तथापि वह अपने में पूर्ण होता है और उसकी अनुभूति भी पूर्ण होती है ।

"खण्डकाव्य के 'खण्ड' शब्द का अर्थ कदापि नहीं कि वह बिखरा हुआ अथवा किसी महाकाव्य का एक खण्ड है, प्रत्युत यह खण्ड शब्द उस अनुभूति के स्वरूप की ओर संकेत करता है जिसमें जीवन अपने सम्पूर्ण रूप में कवि को न प्रभावित कर आंशिक या खंडरूप में प्रभावित करता है ।"

–डॉ. शकुंतला दुबे, काव्यरूपों के मूलस्त्रोत और उनका विकास.

डॉ. शकुंतला दुबे ने खण्डकाव्य के एक महत्वपूर्ण पक्ष को स्पष्ट किया है कि खण्डकाव्य का खंड शब्दांश इस बात का द्योतक नहीं है कि खण्डकाव्य किसी काव्य रूप का खण्डमात्र है । वस्तुतः यह शब्द अनुभूति के उस प्रभाव की ओर संकेत करता है जो खण्डकाव्य का आधार है । जीवन की अनुभूति जब अपने सम्पूर्ण रूप में कवि को प्रभावित करती हैं तब वह महाकाव्य का सृजन करता है और जब उसे खण्डरूप में प्रभावित करती हैं तो खण्डकाव्य की रचना होती है । अनुभूति सदैव पूर्ण और अखण्ड होती है, उसका प्रभाव आंशिक अथवा पूर्ण होता है । प्रभाव की इस अंशता या पूर्णता के अनुसार ही कृति का स्वरूप लघु (खंडकाव्य के रूप में) या दीर्घ (महाकाव्य) हो जाता है । खण्डकाव्य के स्वरूप का स्पष्टीकरण करने के लिए डॉ. शकुंतला दुबे ने महाकाव्य और खंडकाव्य का अंतर स्पष्ट करते हुए पाँच प्रमुख तत्वों का उल्लेख किया है, जिनका खंडकाव्य में अभाव होता है –

"खंडकाव्यकार, महाकाव्यकार की भांति युग को कोई महत् उपदेश नहीं देता, कथा का ख्यात होना आवश्यक नहीं, कथा–संगठन में सुव्यवस्था का अभाव, प्रासंगिक कथाओं का अभाव और सर्गबद्धता के नियम में शिथिलता होती है।"

खंडकाव्य का वस्तु–विस्तार सीमित होता है, वह एक घटना मात्र पर आधारित होता है, इसीलिए उसका सर्गीकरण आवश्यक नहीं । वस्तु–पट की लघुता के ही कारण खण्डकाव्य में प्रासंगिक कथाओं के लिए कोई स्थान नहीं है । खंडकाव्य के सीमित प्रभाव के लिए ख्यात और कल्पित किसी भी प्रकार की कथा का प्रयोग किया जा सकता है ।

कथा संगठन में सुव्यवस्था के अभाव के संदर्भ में डॉ. शकुन्तला दुबे का मत भ्रांत है । संभवतः इस भ्रम का कारण खण्डकाव्य का एक घटनाश्रयी कथा होना है । इतनी छोटी कथा का प्रणयन सर्ग के बिना हो सकता है और लघु परिसर की कथा में पंचसंधियों की योजना भी शक्य नहीं ।*[1] किन्तु खण्डकाव्य की कथा अपने लघु आकार में महाकाव्य जितनी ही सुव्यवस्थित और कसी हुई होती है । 'हिन्दी साहित्य कोश' में भी खंडकाव्य के कथा संगठन पर जोर दिया गया है, और स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि खंडकाव्य के कथा विन्यास में क्रम, विकास, चरमसीमा और निश्चित उद्येश्य में परिणति हो । वस्तु योजना के ये तत्व निश्चय ही संगठन के ही द्योतक हैं ।

"मोटे ढंग से यह कहा जा सकता है कि खण्डकाव्य एक ऐसा पद्यबद्ध कथाकाव्य है, जिसके कथानक में इस प्रकार की एकात्मक अन्विति हो कि उसमें अप्रासंगिक कथाएँ सामान्यतया अंतर्युक्त न हो सके, कथा में एकांगिता–साहित्य दर्पण के शब्दों में एकदेशीयता हो एवं कथा–विन्यास क्षेत्र में क्रम, आरंभ, विकास, चरमसीमा और निश्चित उद्येश्य में परिणति हो।" खंडकाव्य के कवि का दृष्टिकोण महाकाव्य के लिए आपेक्षित व्यक्ति निरपेक्ष और वस्तु–

*[1]डा. सियाराम तिवारी, हिन्दी के समध्यकालीन खंडकाव्य, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली प्रथम संस्कण, पृ. ५१

परक नही रहता ।"

सं. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश, पृ. २४८

"काव्य एक अंश का अनुसरण करनेवाला खंडकाव्य होता है । उससे जीवन की पूर्णता अभिव्यक्त नहीं होती । उसकी रचना के लिए कोई एक घटना अथवा संवेदना मात्र पर्याप्त होती है ।"

डॉ. सरनामसिंह शर्मा, हिन्दी साहित्य पर संस्कृत साहित्य का प्रभाव, पृ. २८

"खंडकाव्य में एक ही घटना होती है और उसमें मानव जीवन के एक ही पहलू पर प्रकाश डाला जाता है । उसमें महाकाव्य के अन्य गुण पूर्णतया विद्यमान रहते हैं ।"

डॉ. बलदेव बाहरी, हिन्दी की काव्यशैलियों का विकास, पृ. ५

'खंडकाव्य-जो काव्य सम्पूर्ण लक्षण युक्त न हो।'

डॉ. नगेन्द्रनाथ बसु, हिन्दी विश्वकोश, पृ. ७०९

"महाकाव्य के एक अंश का अनुसरण करने वाला काव्य, महाकाव्य के लिए आवश्यक वस्तुओं में से जिसमे सब का समावेश न हो और भी अपेक्षया छोटे जीवन क्षेत्र का प्रबंध चित्र उपस्थित करे, वह खंडकाव्य है।"

राजेन्द्र द्विवेदी, साहित्य शास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोश, पृ. ८०

यह परिभाषा भी खंडकाव्य को महाकाव्य के एक अंश का अनुसरण करने वाला मानकर भ्रमित करती है । हिंदी विश्वकोश में प्रस्तुत परिभाषा विलक्षण, अस्पष्ट और भ्रमिक है ।

'सीमित या लघु आकार में रचित कथाकाव्य को ही खण्डकाव्य कहा जा सकता है । इसमें जीवन के एक अंश का चित्रण होता है जो अपने में पूर्ण रहता है ।' इसका अभिप्राय यह है कि किसी महाकाव्य के एक अंश या एक सर्ग को खंडकाव्य नहीं कहा जा सकता है । इसमें निहित खण्ड शब्द जीवन के आंशिक रूप के द्योतक हैं । कवि जीवन के सम्पूर्ण रूप से प्रभावित न होकर उसके आंशिक या खंडरूप को ग्रहण करता है ।

महाकाव्य के वस्तु संघटन की भांति नाट्य-संधियों का निर्वाह खण्डकाव्य के लिए आवश्यक नहीं है और न इसमें अनेक प्रासंगिक कथाओं का नियोजन होना चाहिए । इसमें मुख्य घटना एक ही होती है और उसमें जटिलता का अभाव होता है । इसके लिए सर्गो की संख्या निर्धारित नहीं की जा सकती है । खंडकाव्य में छंद-विधान व्यावहारिक दृष्टि से होना चाहिए । इसमें एक छंद का प्रयोग अधिक काम्य है । इसका स्वरूप समाख्यानात्मक होना चाहिए, पर विषय की दृष्टि से यह भावाभिव्यंजक या प्रगीतात्मक भी हो सकता है । उदाहरण के लिए 'मेघदूत' संस्कृत एवं 'जयद्रथ वध' हिन्दी को रखा जा सकता है।

-डॉ. राजवंश सहाय हीरा, भारतीय साहित्य शास्त्र कोश

'नायक के सम्पूर्ण जीवन को समाविष्ट कर लेने से ही कोई कृति महाकाव्य नहीं हो जाता और न उसके जीवन की गिनी–चुनी घटनाओं को ही वस्तु–रूप में अपनाने के कारण कोई काव्य खण्डकाव्य हो जाता है।

खंडकाव्य का अपना स्वतंत्र अस्तित्व है, यह न तो किसी अन्य काव्य का खंड–मात्र है, न असफल महाकाव्य को खण्डकाव्य कहा जा सकता है,अपितु यह एक स्वतंत्र काव्य–विधा है।जिसका अपना स्वरूप है, अपनी आत्मा है और अपना ही सौंदर्य भी है।'

डॉ. सियाराम तिवारी, हिन्दी के मध्यकालीन खंडकाव्य, पृ १०

<u>पाश्चात्य आचार्यों के मत</u>

अंग्रेजी–साहित्य में खंडकाव्य का यथातथ्य समरूप नहीं मिलता है । Mock-heroic अथवा Mock-Epic का आकार अवश्य ही खंडकाव्य से मिलता–जुलता है लेकिन उसका अभ्यांतर स्वरूप खंडकाव्य से मूलतः भिन्न होता है । Mock-Epic का प्रतिपादन गरिमामय होता है और विषय तुच्छ,क्योंकि व्यंग्य उद्दिष्ट होने के कारण तुच्छ विषय का ग्रहण आवश्यक हो जाता है । इसी तरह Mock-Epic का लक्ष्य भी खंडकाव्य से सर्वथा भिन्न होता है । उसका प्रयोजन नाम से ही स्पष्ट है । Epic का अनुसरण करना ही उसका उद्येश्य होता है । इस प्रयास में उसकी भाषा–शैली तो Mock-Epic के समीप पहुँच जाती है लेकिन उसकी महत्ता उसके सदृश नहीं हो पाती ।

Mock-heroic style is the converse of burlerque & consists in the use of dignified and high-sounding language in the description of trivial things and actions.

-George G. Loane, A short handbook of literary terms (P. 108)

The satisist may or may not adopt the epic machinery but if he make use of it the subject must eighter be low and unsuitable in itself for heroic treatment or its incherent dignity must somehow first be obscured or obliterated.

-Dixon, English Epic & Herolc Poetry (P. 260-261)

The Mock Heroic is written in the heroic manner on a comparatively trivial subject and often with satirical purpose.

-H.L. Yelland, A Handbook of Literary Terms (P. 84)

खण्डकाव्य का स्वरूप

संस्कृत साहित्य शास्त्र के इतिहास के अंतिम चरण में 'खंडकाव्य' शब्द प्रकाश में आने के कारण संस्कृत के आचार्यों और कवियों में यह शब्द अप्रचलित रहा । उन्होंने किसी रचना को इस नाम से अभिहित नहीं किया। आधुनिक वैज्ञानिक युग की व्यस्तता ने महाकाव्य को बहुत कुछ विस्थापित कर दिया और उसका स्थान खंडकाव्य ने लिया । इस तथ्य से परिचित होने के कारण हिन्दी में लिखे गये संस्कृत साहित्य के कुछ इतिहासों में विदेशी परम्परा से हटाने का प्रयास अवश्य किया गया है,लेकिन ये इतने महत्वपूर्ण नहीं है कि संस्कृत साहित्य के देशी–विदेशी विद्वानों का ध्यान ये आकृष्ट करते और वे साहित्यशास्त्र की आधुनिकतम उपलब्धियों के आलोक में संस्कृत–साहित्य को देखते । इस तरह विशाल संस्कृत साहित्य में खंडकाव्य की सुनिश्चित परम्परा अद्धावधि अनिर्धारितप्राय है । मेघदूत और उसके अनुकरण पर लिखे गए दूत–काव्यों के अतिरिक्त संस्कृत साहित्य के अपार परावार में खंडकाव्य की धारा का पता लगाने का प्रयत्न अभी शेष ही है ।

खंडकाव्य की रूपरेखा सर्वप्रथम रूद्रट के मस्तिष्क में आयी,जब उन्होंने कथा आख्यायिका आदि की तरह प्रबंध के महत् एवं लघु दो रूप निर्दिष्ट किये । अनमें प्रथम को महाकाव्य और द्वितीय को खंडकाव्य कहा जा सकता है । लघुकाव्य के उन्होने पुनः दो लक्षण बताये– प्रथम, चतुर्वर्गफल में से किसी एक की सिद्धि होती है, द्वितीय, अनेक रस असमग्र रूप में या एक रस समग्र रूप में होता है, किन्तु दुविधापूर्ण स्थिति यह है कि एक फल की प्राप्ति की व्याप्ति भी पर्याप्त विस्तृत हो सकती है । उसमें अनेक घटनाएँ आ सकती हैं, यहाँ तक कि पूरा जीवन समाविष्ट हो सकता है,फिर भी रूद्रट के मत से वह लघुकाव्य होगा;परन्तु तब वह खंडकाव्य से वृहत्तर होगा अतएव उनके लक्षणों से खंडकाव्य का स्वरूप स्पष्ट नहीं होता ।

खंडकाव्य नाम और उसके निश्चित नियम की संकल्पना का पूर्ण श्रेय आचार्य विश्वनाथ को है। उन्होंने 'साहित्य दर्पण' में खण्डकाव्य की स्पष्ट परिभाषा इस प्रकार दी है –

खंडकाव्यं भवेत्काव्यस्येक देशानुसारि च ॥

विश्वनाथ ने खंडकाव्य को काव्य का एकदेशानुसारी कहा है । उनके मत से काव्य किसी भाषा या उपभाषा में रचित उस रचना को कहतें हैं,जो सर्गबद्ध तथा एक कथा का निरूपक हो और उसमें सभी संधियाँ न हों । काव्य के एक अंश का अनुसरण खंडकाव्य में होता है । विश्वनाथ की परिभाषा में खंडकाव्य का स्वरूप स्पष्ट नहीं होता, पर उससे यह ज्ञात होता है कि महाकाव्य की अपेक्षा इसका आकार लघु हो और इसमें जीवन के एक पक्ष या दृश्य का चित्रण किया जाये।

विश्वनाथ खंडकाव्य की विषयगत् का ही संकेत करते हैं, उनकी दृष्टि इसकी रूप विधान विषयक संभावनाओं की ओर नहीं गई ।उनका कथन है कि खण्डकाव्य का परिमित विषय सीमित आकार में ही अभिव्यक्त हो।

खंडकाव्य में महाकाव्य की भांति विषय, शैली एवं पात्र के विचार से वही गरिमा नहीं होती और न इसमें जातीय जीवन का विस्तृत चित्र उपस्थित किया जाता है ।सीमित या लघु आकार में वर्णित कथा–काव्य को ही खंडकाव्य कहते हैं। इसका कथानक ऐतिहासिक, काल्पनिक या कोई भी हो,पर महाकाव्य की भांति कथानक की ऐतिहासिकता इसमें अनिवार्य नहीं ।इसमें जीवन के एक अंश का चित्रण अपने में पूर्ण रहता है ।इसका अभिप्राय यह है कि किसी महाकाव्य के एक अंश या एक सर्ग को खंडकाव्य नहीं कहा ।इसमें निहित खंड शब्द जीवन के आंशिक रूप का द्योतक है ।कवि जीवन से सम्पूर्ण रूप से प्रभावित न होकर उसके आंशिक या खंडरूप को ग्रहण करता ।

महाकाव्य के वस्तु संघटन की भांति नाट्य संधियों का निर्वाह खंडकाव्य के लिए आवश्यक नहीं है और न इसमें अनेक प्रासंगिक कथाओं का नियोजन होना चाहिए ।इसमें मुख्य घटना एक ही होती है और उसमें जटिलता का अभाव होता है ।महाकाव्य की तरह इसमें सर्गो का विभिन्न आठ से अधिक नहीं होता ।विषय के विस्तार और लाघव की दृष्टि से खंडकाव्य का विभाजन अनेक सर्गों में भी हो और इसका आकार एवं सर्ग का भी हो सकता है। इसके लिए सर्गों की संख्या निर्धारित नहीं की जा सकती।

खंडकाव्य के छंद विधान व्यावहारिक दृष्टि से हो या इसमें एक छंदों का ही प्रयोग अधिक काम्य – इसका स्वरूप समाख्यानात्मक होना चाहिए पर विषय की दृष्टि से यह आवर्तक, व्यंजक या प्रगीतात्मक भी हो सकता है । उदाहरण के लिए 'मेघदूत' संस्कृत और 'जयद्रथ वध' हिन्दी को रखा जा सकता है ।

हिन्दी साहित्य के शास्त्रीय विवेचन के प्रसंग में आचार्य विश्वनाथ इतने घुल–मिल गए हैं कि वे हिन्दी के ही आचार्य जान पड़ते हैं ।संस्कृत साहित्य के परवर्ती आचार्य विश्वनाथ आधुनिक भारतीय साहित्य के मंत्र–द्रष्टा आचार्य मान लिए गए,तथा प्रत्येक विवाद का प्रमाण 'साहित्य दर्पण' में खोजा जाने लगा ।सारी काव्य–विधाओं की परख उन्हीं की कसौटी पर होने लगी ।खंडकाव्य के संदर्भ में भी यही बात हुई ।विश्वनाथ के सूत्र '*खंडकाव्यं भवेत् काव्यस्यैक देशानुसारि च*' के आगे किसी ने कदम ही नहीं बढ़ाये ।इसका एक दुष्परिणाम यह हुआ कि हिन्दी में स्वतंत्र साहित्यशास्त्र के निर्माण का प्रश्न ही नहीं उठा ।

किसी भाषा का साहित्यकार लक्षण–ग्रंथ रहकर साहित्य–सृजन करने नहीं बैठता ।हिन्दी साहित्य के कवि अपनी मेधा के अनुसार ही खंडकाव्य रचते आ रहे हैं लेकिन उनके स्वरूपादि के विवेचन के लिए विश्वनाथ के सूत्र के अतिरिक्त कोई शास्त्र नहीं है ।

लोकनाथ द्विवेदी ने खंडकाव्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए लिखा है –

खंडकाव्य का एक विशेष रूप होता है । ध्यान रहे कि प्रबंधात्मक महाकाव्य और खंडकाव्य में वैसा ही अंतर है,जैसा उपन्यास और लम्बी कहानी में होता है । खंडकाव्य में कथानक को संक्षेप में कहना पड़ता है और घटनाओं के वर्णन भी संक्षिप्त करने पड़ते हैं । जिस समारोह में राजसभा, बारात की सज–धज, नगर–वर्णन, प्राकृतिक दृश्य वर्णन तथा कथोपकथन आदि में वस्तु का विस्तार महाकाव्य में होता है, उस समारोह से खंडकाव्य में नहीं होता, खंडकाव्य में समास शैली का अनुसरण करना आवश्यक होता है,जहाँ महाकाव्य में नायक–नायिका का पूर्ण जीवन विविध विषयों, कार्यों और भावों के चढ़ाव-उतार के साथ चित्रित किया जाता है, वहाँ खण्डकाव्य में क्षेत्र संकुचित होने से केवल दो–चार विशेष स्थानों पर ही विकास दिखलाया जाता है । फिर भी इसमें अंतर्द्वन्द और बहिर्द्वन्द के संघर्ष में विभिन्न भावनाओं को दिखलाकर कथा को क्रमशः कौतूहलवर्द्धिनी रखना आवश्यक होता है । रस स्थापन में भी इसमें सभी संधियाँ नहीं रखी जा सकतीं । इसके सर्ग भी संक्षिप्त होते हैं और वे सात से अधिक नहीं होते । इसका विषय महत् और उदात्त होना आवश्यक है । इसकी भाषा अलंकृत और प्रवाहमयी होती है,जिसमें भावानुगमन और अर्थव्यंजकता होती है। खंडकाव्य में गीतात्मकता से उसका सौंदर्य बढ़ जाता है । इसकी शैली महाकाव्य के समान ही अलंकृत, गुणमयी और उदात्त भाव समन्वित रहती है । कथा–विन्यास में नाटकीयता खंडकाव्य के आकर्षण की वृद्धि करती है । इसमें गीतिकाव्य की भाव प्रवणता और तीव्र अनुभूति की व्यंजना का चमत्कार रहता है ।

खण्डकाव्य के लक्षण

अग्रेषित विवेचना के आधार पर खण्डकाव्य के निम्नलिखित लक्षण दिए जा सकते हैं –

१– खंडकाव्य का नायक सुर, असुर, मनुष्य, इतिहास–प्रसिद्ध, कल्पित, शांत, ललित, उदात्त और उद्धत में से किसी भी प्रकार का हो सकता है ।

२– नायक के जीवन की एक ही घटना का वर्णन होता है,जो जीवन के किसी एक पक्ष की झलक प्रस्तुत करता है।

३– कथा–संगठन आवश्यक है, कथा विन्यास में क्रम, आरम्भ, विकास, चरमसीमा और निश्चित उद्येश्य हो ।

४– सर्गबद्धता अनिवार्य नहीं है ।

५– कथा का ख्यात अथवा इतिहास प्रसिद्ध होना अनिवार्य नहीं है ।

६– प्रासंगिक कथाओं का अभाव होता है ।

७– अपने छोटे आकार में ही पूर्ण होता है । नाम के खण्ड शब्द से उसे किसी अन्य काव्यरूप का खंड नहीं समझना चाहिए ।

८– जिस अनुभूति की अभिव्यक्ति इसमें होती है वह भी खंडित न होकर पूर्ण होती है,जिसका प्रभाव अवश्य ही कवि पर आंशिक पड़ता है ।

९– महाकाव्य के गुणों से शून्य नहीं होता है ।
१०–व्यक्ति को कोई उपदेश नहीं दिया जाता है ।
११–चतुर्वर्ग में से किसी एक की प्राप्ति उद्येश्य होता है ।
१२–एक रस समग्र अथवा अनेक रस असमग्र रूप में रहते हैं ।
१३–सभी संधियाँ नहीं होतीं ।
१४– छंद प्रयोग के लिए कोई निश्चित नियम नहीं हैं ।
१५–रचना भाषा या विभाषा में हो सकती है ।

खण्डकाव्य के विविध नाम

खंडकाव्य को उसका यह नाम विश्वनाथ कविराज ने प्रदान किया । खंडकाव्य का स्वतंत्र लक्षण प्रस्तुत न कर कविराज ने उसे काव्य के लक्षणों पर आधृत कर दिया है और काव्य के एक खंड का अनुसरण करनेवाले को खंडकाव्य कहा है।अतः बाह्य स्वरूप की दृष्टि से जो काव्य का एक खंड है,उसे खंडकाव्य कहना ही चाहिए । विश्वनाथ के पूर्व रूद्रट ने इस प्रकार के काव्यों को लघुकाव्य की संज्ञा प्रदान की थी ।

ते लाघवो विज्ञेया येष्वन्यतमों भवेच्चतुर्वर्गीत् ।
असमग्रानेकरसा ये च समग्रैकर सयुक्ताः ॥

रूद्रट, काव्यालंकार १६ /६

प्रबंधकाव्य का आकार की दृष्टि से वर्गीकरण करते हुए उन्होने उसे महत् और लघु दो वर्गो में विभक्त किया। महत् काव्य का अभिप्राय है महाकाव्य और लघुकाव्य का खंडकाव्य । रूद्रट के लघुकाव्य में विश्वनाथ के काव्य और खंडकाव्य दोनो अंतर्भुक्त हैं और इसका क्षेत्र भी वृहत्तर है । विश्वनाथ ने महाकाव्य और खंडकाव्य के बीच की एक काव्य विधा की कल्पना की जिसको उन्होने काव्य की संज्ञा दी । उन्होने खंडकाव्य का स्वतंत्र लक्षण निरूपित नहीं किया । खंडकाव्य के लिए डॉ. भागीरथ मिश्र ने खंडप्रबंध नाम दिया है । काव्यशास्त्र में डॉ. भागीरथ मिश्र ने लिखा है – प्रबंध काव्य का दूसरा भेद खंडकाव्य या खंड प्रबंध है । मिश्र जी ने प्रबंधकाव्य के वर्गीकरण के दो स्तर किए – महाप्रबंध और खंडप्रबंध ।

खण्डकाव्य के भेद

खंडकाव्य के विशेष विवेचन – विश्लेषण का कार्य संस्कृत साहित्य में न होने के कारण उसके वर्गीकरण का उल्लेख भी कहीं प्राप्त नहीं होता है । हिन्दी साहित्य के विद्वानों का भी ध्यान समुचित रूप में वर्गीकरण हेतु आकृष्ट नहीं हुआ । सर्वप्रथम डॉ. भागीरथ मिश्र ने अपने काव्यशास्त्र में छंद योजना के आधार पर इसके दो वर्ग किये – एकार्थ और अनेकार्थ खंडकाव्य । जिस खंडकाव्य में आद्योपांत एक ही छंद का प्रयोग होता है, उसे एकार्थ और जिस रचना में अनेक छंदों का प्रयोग होता है उसे अनेकार्थ खंडकाव्य की संज्ञा दी । इसकी उपयुक्तता निःसंदिग्ध है किन्तु एकार्थ एवं अनेकार्थ शब्दों से छंदों की एकरूपता एवं अनेकरूपता का बोध नहीं होता,पर इन दोनों प्रकारों के खण्डकाव्य संख्या अथवा सौंदर्य की दृष्टि से किसी से न्यून नहीं ।

तत्पश्चात डॉ. शकुन्तला दुबे ने अपनी कृति 'काव्यरूपों के मूल स्त्रोत और उनका विकास' में खण्डकाव्य साहित्य का वर्गीकरण प्रस्तुत किया । हिन्दी खण्डकाव्यों के उपलब्ध रूपों को उन्होंने अंतः प्रेरणा, अंतःस्वरूप, उद्येश्य एवं शैली के आधार पर वर्गबद्ध किया । अनुगम विधि से किया गया यह वर्गीकरण सीमायुक्त है,किन्तु मिश्रजी के वर्गीकरण को उनके खंडकाव्य साहित्य के वर्गीकरण में स्थान नहीं मिला है। जबकि खंडकाव्य के वर्गीकरण के लिए उसके शास्त्रीय लक्षणों के आधार पर चिंतन और कल्पना के योग से वर्ग विभाजन होना चाहिए ।

खंडकाव्य की मीमांसा से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि खंडकाव्य की प्रेरणा के मूल में अनुभूति का स्वरूप एक सम्पूर्ण जीवन खंड की प्रभावात्मकता से बनता है । जीवन के मर्मस्पर्शी खण्ड का बोधमात्र कवि के ह्रदय में नहीं होता । प्रत्युत उसका समन्वित प्रभाव उसके ह्रदय पर पड़ता है,तब प्रेरणा के बल पर जो रूप खड़ा होता है,वह खण्डकाव्य कहलाता है । कहीं इस जीवन खण्ड की विस्तार सीमा अधिक होती है,तो कहीं उसकी परिधि छोटी होती है;जिससे खण्डकाव्य का कथानक कहीं बहुत बड़ा होता है तो कहीं बहुत छोटा।किन्तु कथा के इस विस्तार एवं संकोच के तारतम्य से खंडकाव्य की महत्ता नहीं आँकी जाती,क्योंकि जीवन के किसी एक अंश की व्याख्या करने वाला खंडकाव्य अपने छोटी–सी परिधि में भी चमक उठता है ।